ference and they have referred to other countries also and have given more statistical data than anything else.

Kickbacks pertaining to Pepsi Project

*243. SHRI KAILASH PATI MISHRA:

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE:†

Will the Minister of FOOD PROCESSING INDUSTRIES be pleased to state:

(a) whether Government's attention has been drawn to the news report about kickbacks in the multi-national Pepsi Project; if so, what are the facts thereof and follow up action taken in the matter; and

(b) whether it is a fact that the company has already spihoned-off its profits out of the country; if so, how much and what action has been taken as yet or is proposed to be taken in this regard?

THE MINISTER OF TEXTILES WITH ADDITIONAL CHARGE OF THE MINISTRY OF FOOD PROCESSING INDUSTRIES (SHRI SHARAD YADAV): (a) and (b) News reports to this effect have come to Government's notice.

Various views have been expressed in respect of different aspects of this project. They are under the active consideration of the Government.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति महोदय, मैंने एक निश्चित प्रश्न पूछा था। मैं आशा करता था कि उसका निश्चित उत्तर दिया जाएगा। लेकिन मंत्री महोदय ने जो टालू मिक्चर पिलाया है, उससे सन्तोष नहीं होगा। मैं प्रश्न का एक हिस्सा और एक उत्तर का हिस्सा पढ़ना चाहता हूं, उसके बाद मैं उप-प्रश्न पूछूंगा।

श्री सभापति : बहुत छोटा सा प्रश्न है क्या पढ़ना है उसको ?

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Atal Bihari Vajpayee.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : महोदय, आपके ध्यान में लाना जरूरी है। प्रश्न था कि क्या यह सच है कि इस कंपनी द्वारा अपने लाभों को पहले ही देश से बाहर भेज दिया गया है, यदि हां, तो कितनी राशि इस प्रकार विदेश भेजी गई है और अब तक इस बारे में क्या कार्यवाही की गई है अथवा किए जाने का विचार है?

इसका उत्तर देखिए--इस परियोजना के विभिन्न पहलुओं के संबंध में विभिन्न विचार व्यक्त किए गए हैं। सरकार इन पर सक्रिय विचार कर रही है।

श्री सभापति : सक्रिय विचार हो रहा है, अब क्या निष्क्रिय विचार करें ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी श्रीमन्, मैंने इसलिए पूछा था कि आरोप यह लगाया गया है कि पैप्सी कोला को लाइसेंस देने में गोलमाल हुआ है। अब सरकार ने यह भी नहीं कहा कि हुआ है, यह भी नहीं कहा कि नहीं हुआ है। सरकार ने यह भी नहीं कहा कि वह जांच कर रही है। तो किस बात पर विचार हो रहा है, सक्रिय विचार किस बात पर हो रहा है? गोलमाल का जो आरोप लगाया गया है, उसका एक आधार है। 1988 में जब इस परियोजना को स्वीकृति दी गयी तो इसका खर्चा बहुत कम था, 22 करोड़ था, अब वह बढ़कर 75 करोड़ हो गया है। यह ठीक है कीमतें बढ़ी हैं, मूल्यों में वृद्धि हुई है। मगर तीन गुना खर्चा बढ़ जाना, इसका औचित्य क्या है ? इस तरह की और भी परियोजनाएं चल रही हैं, मैं नाम नहीं लेना चाहता क्योंकि मैं प्रचार करना नहीं चाहता। पेप्सी कोला पोटेटो-चिप्स बना रही है, पाप कार्न बना रही है। इस तरह के खाद्य बनाने वाले और भी उद्योग हैं, उनके ऊपर कितनी लागत आयी है, इसके आंकड़े मेरे पास हैं, मैं उन्हें उद्धृत कर सकता हूं। लेकिन 75 करोड़ की वृद्धि यह बताती है कि दाल में कुछ काला है। **(व्यवधान)**

श्री कमल मोरारका : पूरी दाल काली है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आपके मंत्री को तो दाल में काला नहीं दिख रहा है तो आपको पूरी दाल काली कैसे दिख रही है । **(व्यवधान)**

श्री सभापति : आपके मंत्री भी तो हैं वह ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मेरे हैं मगर उनके ज्यादा हैं । **(व्यवधान)** मंत्री हम सबके हैं। **(व्यवधान)** आप ऐसा क्यों कह रहे हैं वे मेरे हैं, उनके भी हैं। **(व्यवधान)** जब दाल में काले का मामला आता है तो यह बोलते नहीं हैं । हम पहले भी बोलते थे और अब भी बोल रहे हैं । **(व्यवधान)**

श्री सभापति : आपको एडवांटेज है कि आप घर में भी बात कर सकते हो । **(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह घरेलू मामला नहीं है । मैं यह जानना चाहता हूं कि जिस तरह से इस परियोजना की लागत बढ़ी हैं उससे सन्देह उत्पन्न हुए हैं । क्या सरकार इस मामले की गहराई से जांच करायेगी और पता लगायेगी कि 22 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली योजना अब 75 करोड़ रुपये तक कैसे पहुंच गयी ?

श्री सभापति : इनका स्पेसिफिक क्वेश्चन है पेप्सी कोला के बारे में । इसका जवाब दे दें । His question was specific.

श्री शरद यादव : सभापति महोदय, आदरणीय अटल जी ने जो सवाल पूछा था मैं चाहता हूं उसका जबानी जवाब जो है वह मैं विस्तार से दूं।

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी : जबानी जबाब या जबानी ? **(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : जबानी जवाब । **(व्यवधान)** दोनों को मिलाकर समझ लीजि । **(व्यवधान)**

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी : जबानी भी है और जबानी भी ?

श्री शरद यादव : स्वामी जी वाला दिया जायेगा । **(व्यवधान)** सभापति महोदय, पेप्सी कोला का जो प्रोजेक्ट है इस पर पूरे देश भर में बहुत बड़ी कंट्रोवर्सी है। इस सवाल पर 48 एम० पी०ज० ने लिखित इस कम्पनी की बाबत विरोध पत्र दिया है । हमारे परम मित्र दीपेन घोष जी ने कहा है पेप्सी को निकाल कर बाहर करो ।

माननीय सदस्य : इसे विपक्ष भेज दो। **(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : जिस खबर के आधार पर अटल जी ने सवाल पूछा है, मेरे सहयोगी मंत्री जार्ज फर्नांडीज जी ने प्रेस कांफ्रेंस करके इन सवालों को उठाने का काम किया है । ये सारी चीजें मेरे पास हैं। सभापति जी, मैं मानता हूं कि पेप्सी जैसा सवाल जो है वह पहले से ही चला आ रहा है । यह प्रोजेक्ट पंजाब में है। मैंने जिन माननीय सदस्यों का नाम लिया पंजाब के भीतर के भी लोग हैं जो मजबूती से यह कहते हैं, बादल साहब, मान साहब और अमरेन्द्र सिंह आदि ये लोग चाहते हैं कि पेप्सी किसी कीमत पर यहां से नहीं जाना चाहिए ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : चाहते थे ।

श्री शरद यादव : आपने जो सवाल किया उस काल की बात कर रहा हूं उसके आस-पास यह विचार रखा गया ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : तब का विचार था ।

श्री शरद यादव : जो तथ्य है मैं उनको साफ-साफ रख रहा हूं । मैं आपसे कहना चाहता हूं कि पेप्सी ने अपने प्रोजेक्ट की जो कॉस्ट है उसको बढ़ाया है लेकिन 75 करोड़ रुपये नहीं है 50 करोड़ रुपये है । यानी उसको बढ़ाने का काम किया है ।

श्री सुरेश कलमाडी: 75 हो जायेगा।

श्री शरद यादव: हां, मान सकता हूं क्योंकि आप तो पहले से इस सवाल को जानते हैं। आप इस सवाल के पीछे जब विरोध पक्ष में थे तब भी लगे हुए थे और जब उसमें आ गये तब जरा चुप हो गये थे। अब फिर चालू हो गये हैं। लेकिन मैं सदन का पुराना सदस्य हूं। माननीय सुरेश कलमाडी जी जब हमारे साथ थे तो उन्होंने मजबूती से इस सवाल को पूछा था।

श्री सभापति: आपस की बात सेन्ट्रल हाल में होनी चाहिए। अभी तो पेप्सी की बात कीजिये।

श्री शरद यादव: सभापति जी, मैं उनके सवाल को छोड़ देता हूं। लेकिन इसके ट्रेड नेम पर बहुत विवाद है, इसने जो प्रोडक्शन शुरू किया है, उस पर विवाद है। हमारे मंत्रालय ने इन सारी चीजों पर कार्यवाही करने का काम किया है। मैं अटल जी से निवेदन करना चाहता हूं कि इस सवाल से संबंधित पेप्सी ने कौन सी किकबैक ली है और कौन मनी साइफन हो रही है, इस बारे में कोई भी बात उनके पास हो या किसी भी माननीय सदस्य के पास हो तो वह वे हमारे पास देने का काम करें। जो शर्तें हैं और जो हमारे हाथ में अधिकार है उनके अन्तर्गत सख्त से सख्त कार्यवाही करने में कोई जरा सी भी चूक नहीं होगी, तत्काल कार्यवाही करने का काम होगा। यह जो विवाद है, इस विवाद के बाबत अकेले हमारे मंत्रालय के सिर पर यह जिम्मेदारी ढोना मैं ठीक नहीं मानता हूं क्योंकि इस सवाल के साथ बहुत लोग जुड़े हुए हैं, इस विवाद के साथ बहुत लोगों का संबंध बन गया है। हम इस सवाल को केबिनेट में ले गये हैं। हमने इस सवाल को केबिनेट में ले जाने का काम किया है और वह इसलिए किया कि मेरे सहयोगी मंत्री इस पर अपनी राय दे चुके हैं और यह राय उन्होंने मंत्री बनने के बाद दी हो, ऐसी बात नहीं है। पहले से ही उनकी राय थी और मैंने एक जगह देखा है कि हमारे वरिष्ठ मंत्री .... **(व्यवधान)**

श्री सैय्यद शहाबुद्दीन: श्रीमन्, ये किस केपेसिटी में उत्तर दे रहे हैं?

श्री सभापति: मंत्री के नाते जवाब दे रहे हैं।

श्री शरद यादव: मेरे कहने का मतलब यह है कि इतने तरह के विवाद हैं। इन सारी चीजों पर विचार करने के लिए अगर कोई सामूहिक निर्णय होगा तो वह मजबूत होगा और समूची चीज पर देश के पक्ष में फैसला होगा, मैं इतना ही कहना चाहता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: सभापति महोदय, मंत्री महोदय ने मामला केबिनेट में भेज दिया और केबिनेट क्या कर रही है, उसका इस सदन से संबंध नहीं है। हमें तो सरकार का उत्तर चाहिए।

श्री सभापति: इसलिये उन्होंने कहा है कि एक्टिव कंसीडरेशन में हैं, सक्रिय चिन्तन हो रहा है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: उन्होंने यह भी आश्वासन नहीं दिया कि सारे मामले की उच्च स्तरीय जांच की जाएगी। मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं कि जब लायसेंस दिया गया था तो लायसेंस पंजाब एग्रो इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन को दिया गया था और लायसेंस की वकालत इसलिये की गई थी कि पंजाब में फल पैदा होते हैं, साग-सब्जियों पैदा होती हैं, उन्हें प्रोसेस करने, डिब्बों में बंद करने, उन्हें बेचने और विदेशों में भेजने का प्रबन्ध होना चाहिए और वह प्रबन्ध हो, इसलिए पेप्सी को अमेरिका से सादर आमंत्रण देकर बुलाया जा रहा है।

श्री सभापति: अब आप प्रश्न कीजिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: आपने पूरी रामायण सुन ली, अब आप उत्तर काण्ड पर कह रहे हैं कि प्रश्न क्या है?

श्री सभापति : अटल जी जब आप इधर बैठेंगे तब उत्तर काण्ड होगी, अभी तो आप प्रश्न काल में हैं, उत्तर काण्ड में नहीं हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इसलिये मैं उत्तर काण्ड की बात कर रहा हूं । क्या यह सच है कि पेप्सी प्रोजेक्ट ने कहा है कि पंजाब में जो फल पैदा होते हैं वे प्रोसेस करने लायक नहीं हैं और वहां पर फ्रेट रेट ज्यादा है, इसलिये न तो हम फलों को डिब्बा बंद करेंगे और न साग-सब्जियों को सुरक्षित रखेंगे । हम तो खाली पेय बनायेंगे ? मंत्री महोदय ने स्वयं स्वीकार किया है कि विदेशी कंपनियों पर यह रोक लगी है कि वे फारेन ब्रांड नामों का उपयोग नहीं करेंगे । तो पेप्सी नाम का उपयोग करने की छूट कैसे दी जा रही है ?

दूसरा इससे जुड़ा हुआ सवाल यह है कि पेप्सी का हेडक्वार्टर दिल्ली में है और उनका कार्य क्षेत्र पंजाब में है । क्या सरकार उनसे कहेगी कि वे दिल्ली से अपना बोरिया बिस्तर लेकर पंजाब में जाय और पंजाब में रोजगार के अवसर बढ़ाने में योगदान दें ?

श्री शरद यादव : सभापति जी, आदरणीय अटल जी की बात मैं साफ नहीं कर पाया । मैं यह कहना चाहता हूं कि जो ब्रांड नेम पेप्सीएरा रखा गया है उस पर भी हमारे मंत्रालय ने कार्यवाही की है । रजिस्ट्रार, ट्रेड, नेम होता है इंडस्ट्री डिपार्टमेंट में, उसको हमने बाकायदा अपना प्रोटेस्ट दर्ज कराया है, इसके बाबत बात बतलाई है क्योंकि ट्रेड नेम देने का काम उनका है । उन्होंने हमारे पास रिपोर्ट बैक की है और उन्होंने जो राय दी उस राय को हमने इंडस्ट्रीज डिपार्टमेंट को पहुंचाने का काम किया है । उन्होंने राय दी थी तो इसको इंडस्ट्रीज डिपार्टमेंट को पहुंचा दी । हमने इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट को भी पत्र लिखा है । इस प्रोजेक्ट का जो लेटर आफ इंटेन्ट है, उसको उन्होंने जो इंडस्ट्रियल लाइसेंस में कन्वर्ट होने से पहले काम शुरु कर दिया है, उसके बाबत भी हमने कार्यवाही की है । मेरा निवेदन यह है कि जो इस कंपनी ने शर्तें करार की है, उन करारों से बाहर की जो बातें हैं उनको आप पूछ रहे हैं । लेकिन जो इस समय करार है, इस करार के अन्तर्गत जो हमारे अधिकार हैं, जो हमारी ताकत है, जो हमारी शक्ति है उसके अंदर हम कार्यवाही कर रहे हैं । रहा सवाल कि इसमें किस तरह का भ्रष्टाचार हुआ है, कौन सी चीजें हुई हैं, इसके बारे में बहुत कुछ कहा गया है लेकिन प्रमाण के तौर पर हमको किसी ने कुछ भी बताने का काम नहीं किया है । जो कहा गया है उसको खोजबीन हमने की है । इसमें हम किसी मंजिल तक, बात के सिरे तक पहुंच नहीं पा रहे हैं । लेकिन जिस तरह का विवाद है उसके प्रमाण के तौर पर कोई भी चीज, कोई भी बात हमारे पास नहीं पहुंची है, इतना ही मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं ।

श्री सभापति : इसका उत्तर आपने नहीं बताया कि दिल्ली से वे पंजाब चले जायें ।

श्री शरद यादव : सभापति जी, पेप्सी क्योंकि विवाद का विषय बन गया है । इसके करार में कहीं नहीं लिखा है कि इसका दफ्तर कहां रहेगा । जो करार है उसके अन्तर्गत ही हम दबाव डाल सकते हैं । उस करार में कहीं भी यह बात नहीं कही गई है क्योंकि पूरे देश भर के दफ्तर दिल्ली में ही हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर करार की बात हो रही है तो मुझे अपना सवाल दोहराना पड़ेगा । करार के अन्तर्गत . . .

श्री सभापति : आपने दिल्ली वाली बात पूछी थी वह मैंने पूछी है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उसके पहले मैंने एक और बात पूछी थी कि

पहले प्रोजेक्ट बना था फल, साग और सब्जियों को सुरक्षित रखने के लिये । क्या यह सच है कि पेप्सी ने इसको छोड़ दिया है ?

श्री शरद यादव: जो करार है उस करार के अन्तर्गत माननीय अटल जी ने जो पूछा, इस संबंध में मैं कहना चाहता हूं कि फ्रूट, वेजीटेबल को प्रोसेस करने के लिये किसी तरह का डिनाइल अभी तक नहीं पहुंचाया है और न वे डिनाइ कर सकते हैं । जो करार है...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अभी तक उन्होंने क्या बनाया है ?

श्री शरद यादव : अभी तक कानून के अन्तर्गत हमारे मंत्रालय ने उन को चिप्स बनाने के काम की इजाजत नहीं दी है, वे चिप्स बना रहे हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : चिप्स बनाने के लिये अमेरिकी कंपनी की जरुरत है ?

SARDAR JAGJIT SINGH AURORA: Sir, I woud like to know if there has been any report from the Punjab Government about the progress of the project and whether there is any proposal that in due course, the Pepsi organisation is hoping to improve the product in Punjab itself so that the Punjab product can be tinned and bottled as required.

श्री शरद यादव : सभापति जी, अभी तक इस तरह की कोई जानकारी हमारे पास नहीं है ।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल : मैं मंत्री महोदय से बड़ा स्पेसिफिक और छोटा सा क्वेश्चन पूछना चाहूंगा । आपने करार का जिक्र किया । करार में लिखा हुआ है, इस वक्त मझे फिगर्स याद नहीं कि पहले वे फ्रूट प्रोसेसिंग वहा पर करेंगे । और एक अमाऊंट पहले एक्सपोर्ट करेंगे जिससे 60–65 या पता नहीं 100–150 करोड़ का एक्सपोर्ट होगा और उसमें फारेन एक्सचेंज आएगा । उसके बाद ही वह यहां पर ड्रिंक्स बना सकेंगे । इसके जवाब में मुझे यह न कहिये कि कानून में यह बात नहीं है, इसकी कमेटी बनाएंगे जांच करवायेंगे या केबीनेट में भेजा है । मुझे यह स्पष्ट बताइये कि वह तब तक ड्रिंक्स यहां नहीं बना सकेंगे जब तक अपनी कमिटमेंट के बराबर एक्स्योर्ट न कर लें और फौरन एक्सचेंज न अर्न कर लें । क्योंकि यहां पर ड्रिंक्स बनाने की फैक्टरियां आलरेडी पंजाब में बननी शुरु हो गई हैं । मुझे यह डर है कि एक्सपोर्ट बिलकुल नहीं होगा और यहां पर ड्रिंक्स आ जाएगा । तब आप यह कह देंगे कि यह कानून की बात है, हम ने ला मिनिस्ट्री को भेजा हुआ है । ऐसा न हो । आप यह स्पेसिफिक बताइये कि तब तक आप उनको फैक्टरी लगाने की परमिशन नहीं देंगे जब तक वह अपना एक्सपोर्ट कमिटमेंट पूरा नहीं करते हैं ।

श्री शरद यादव : सभापति जी, मैंने तो पहले ही कहा कि करार से बाहर कोई काम उनको नहीं करने दिया जाएगा ।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल : आप बताइये कि एक्सपोर्ट का करार है या नहीं है ? **(व्यवधान)**

श्री सभापति : उन्होंने बताया है कि कायदे के बाहर बिलकुल नहीं जाने देंगे ।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल : एक्सपोर्ट की क्लाज़ करार में है या नहीं है ?

श्री शरद यादव: मैं आपको एश्योर करता हूं कि करार के अन्तर्गत जो कंडीशंस हैं उनको उन्हें पूरा करना पड़ेगा । उसके पहले एक्सपोर्ट नहीं कर सकते हैं **(व्यवधान)**

श्री पवन कुमार बांसल : उससे पहले एक्सपोर्ट नहीं कर सकते हैं, यह क्या कह दिया है आपने ? आपने तो उल्टी बात कह दी है **(व्यवधान)** पहले एक्सपोर्ट करेंगे उसके बाद ही वह दूसरा काम कर सकते हैं । आपने तो उल्टा कह दिया **(व्यवधान)**

श्री सभापति : उनका मतलब यह है कि एक्सपोर्ट कमिटमेंट वह पूरा करेंगे **(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : सभापति जी, मैंने साफ कहा है कि एक्सपोर्ट के करार की जो शर्तें हैं वह पूरी कराई जाएंगीं । **(व्यवधान)**

श्री सैयद सिब्ते रजी : उनका कहना यह है **(व्यवधान)**

श्री सभापति : उनको सवाल करने दीजिए । **(व्यवधान)** यह बीच में उचकने का नया तरीका शुरु हो गया है **(व्यवधान)**

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Sir, the newspapers are full of allegations of kickbacks and they are pretty serious. I would like to know from the Government whether they have also seen the newspaper reports of 'kick-forwards'. In other words, kickback is when you are paying to see a contract going through; and kick-forward is when you are paying to see a contract does not go through. And there have been allegations that a particular bottling company, cold drinks company in Bombay, is financing kick-forwards on this Pepsi deal. I would like to know whether the Minister would be good enough to appoint a Parliamentary Committee to examine both, the kick-forwards and the kickbacks.

श्री शरद यादव : मैंने पहले ही निवेदन किया है **(व्यवधान)** किक-बैक की बाबत बहुत सी खबरें अखबारों में निकली हैं **(व्यवधान)** जब हम विरोध पक्ष में थे **(व्यवधान)** लेकिन किक-फारवर्ड की बाबत मुझे जानकारी नहीं है **(व्यवधान)**

श्री दीपेन घोष : किक फारवर्ड के बारे में जानकारी नहीं है **(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : नोटिस चाहिये ? **(व्यवधान)**

श्री सुब्रहमण्यम स्वामी : आप किकफारवर्ड के बारे में कुछ कहिये रिकार्ड के लिए **(व्यवधान)** What did he say, I could not hear..... (*Interruptions*)...I have asked a question, Sir. Does he know about the kick-forwards? The answer is yes or no..... (*Interruptions*)...

श्री शरद यादव : स्वामी जी के बारे में जानता हूं, कि फारवर्ड के बारे में नहीं जानता ।

MR. CHAIRMAN: Question No. 244.

SHRI DIPEN GHOSH: Already there is a violation of the contract...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: I have called Q. No. 244.

Purchasing strategy of cotton corporation of India

*244. SHRI KAMAL MORARKA: Will the Minister of TEXTILES be pleased to state:

(a) whether the Cotton Corporation of India has reoriented its purchasing strategy;

(b) if so, what are the salient features thereof;

(c) what would be the advantages thereof to the farmers?

THE MINISTER OF TEXTILES WITH ADDITIONAL CHARGE OF THE MINISTRY OF FOOD PROCESSING INDUSTRIES (SHRI SHARAD YADAV): (a) Yes, Sir.

(b) The Corporation has increased its volume of purchases, specially in respect